



ASTRO ARPITA NATH

वैदिक ज्योतिष की 7 प्रमुख शाखाएं

Arpita Nath द्वारा • यहाँ से शुरू — आधार • 2026-07-26

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) एक विशाल ब्रह्मांडीय विज्ञान है, लेकिन हजारों वर्षों में, यह 7 प्रमुख शाखाओं या विचारधाराओं में विकसित हुआ है। प्रत्येक पद्धति जन्म कुण्डली (Kundli) पढ़ने, भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने और पिछले जन्म के कर्मों को उजागर करने के लिए एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान करती है।

यहाँ वैदिक ज्योतिष की 7 प्राथमिक परंपराओं का एक सरल विवरण दिया गया है:

1. पाराशरी पद्धति (प्राथमिक आधार)

- आधार:** प्राचीन ग्रंथ 'बृहत् पाराशर होरा शास्त्र' पर आधारित।
- प्रमुख विशेषताएं:** स्थिर कारकों (Sthira Karakas), ग्रह दृष्टि (Graha Drishti), नक्षत्रों (Nakshatras) और प्रसिद्ध 120-वर्षीय विंशोत्तरी दशा (Vimshottari Dasha) प्रणाली का उपयोग करती है।
- मुख्य उपयोग:** जन्म कुण्डली (Kundli) विश्लेषण और समग्र जीवन भविष्यवाणियों के लिए दुनिया में सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली और लोकप्रिय पद्धति।

2. जैमिनी पद्धति (उन्नत विश्लेषणात्मक शाखा)

- आधार:** महर्षि जैमिनी के 'जैमिनी सूत्र' से ली गई।
- प्रमुख विशेषताएं:** चर कारकों (Chara Karakas जैसे आत्मकारक), राशि दृष्टि (Rashi Drishti), चर दशा (Chara Dasha) और आरूढ़ पदों (Arudha Padas - कथित स्थिति) का उपयोग करती है।
- मुख्य उपयोग:** जीवन की प्रमुख घटनाओं, आत्मा के उद्देश्य और आध्यात्मिक विश्लेषण को सटीकता से इंगित करने के लिए अत्यधिक प्रभावी।

3. ताजिक पद्धति (वार्षिक भविष्यफल और प्रश्न)

- आधार:** वैदिक परंपरा के साथ मिश्रित फ़ारसी और अरबी ज्योतिषीय तकनीकों से प्रभावित।
- प्रमुख विशेषताएं:** वार्षिक सौर वापसी चार्ट (वर्षफल - Varshaphal) और तात्कालिक प्रश्न विश्लेषण (प्रश्न या होरारी ज्योतिष) पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करती है।
- मुख्य उपयोग:** किसी विशिष्ट वर्ष के लिए महीने-दर-महीने परिणामों की भविष्यवाणी करना और जन्म कुण्डली (Kundli) की आवश्यकता के बिना तात्कालिक, विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर देना।

4. भृगु पद्धति (पूर्व जन्म और कार्मिक प्रतिरूप)

- आधार:** पौराणिक ऋषि महर्षि भृगु (भृगु संहिता) से जुड़ी हुई।

- **प्रमुख विशेषताएं:** नाड़ी (Nadi) तकनीकों से गहराई से जुड़ी हुई, जो पूर्व जन्म के कर्मों (कर्मफल) और आत्मा के चक्रों पर जोर देती है।
- **मुख्य उपयोग:** पिछले जन्म के कर्मों से उत्पन्न वर्तमान जीवन की समस्याओं के मूल कारणों को उजागर करना।

5. नाड़ी पद्धति (विस्तृत और विशिष्ट भविष्यवाणियां)

- **आधार:** प्राचीन ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियों (नाड़ी ग्रंथ) पर दर्ज एक अत्यंत सम्मानित दक्षिण भारतीय परंपरा।
- **प्रमुख विशेषताएं:** पारंपरिक भाव स्वामियों पर अधिक निर्भरता के बिना प्रत्यक्ष ग्रह योग (Yogas)।
- **मुख्य उपयोग:** विवाह के समय, संतान, करियर के महत्वपूर्ण पड़ावों और स्वास्थ्य के बारे में अत्यधिक विशिष्ट और आश्चर्यजनक रूप से सटीक विवरण देने के लिए जानी जाती है।

6. तांत्रिक ज्योतिष (उपचारात्मक और गूढ़ ज्योतिष)

- **आधार:** गूढ़ तांत्रिक ज्ञान और आध्यात्मिक ऊर्जा कार्य में निहित।
- **प्रमुख विशेषताएं:** पवित्र मंत्रों (Mantras), रहस्यमय ज्यामितीय आरेखों (यंत्रों - Yantras), अनुष्ठानों (तंत्र - Tantra) और ताबीज या रक्षा कवच (Kavach) का उपयोग करती है।
- **मुख्य उपयोग:** गंभीर ग्रह दोषों (Doshas) को दूर करना, ऊर्जावान सुरक्षा, त्वरित परिणाम और निरंतर आने वाली बाधाओं पर विजय पाना।

7. ध्रुव पद्धति (सूक्ष्म गणनाएं)

- **आधार:** सटीक समय और गणितीय विभाजन पर केंद्रित एक जटिल शाखा।
- **प्रमुख विशेषताएं:** कुण्डली को सूक्ष्मता से समझने के लिए गहन गणितीय उप-विभाजनों और विशेष विश्लेषणात्मक नियमों का उपयोग करती है।
- **मुख्य उपयोग:** उच्च-सटीकता वाली कुण्डली सुधार (chart rectification) और विस्तृत वर्ग कुंडलियों का विश्लेषण।

यद्यपि अधिकांश ज्योतिषी अपनी यात्रा पाराशरी पद्धति से शुरू करते हैं, लेकिन जैमिनी और नाड़ी परंपराओं के दृष्टिकोण को मिलाने से व्यक्ति के भाग्य का उल्लेखनीय रूप से संपूर्ण चित्र प्राप्त होता है।

<https://astroarpitanath.com/hindi/7-branches-of-vedic-astrology/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।